INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(1): 31-33
Received: 22-11-2024
Accepted: 09-01-2025

पीताम्बर मंगानी
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
स्व. श्री गुरू शरण छाबड़ा
राजकीय महाविद्यालय सूरतगढ़,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

लक्ष्मी देवी नंदा
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
स्व. श्री गुरू शरण छाबड़ा
राजकीय महाविद्यालय सूरतगढ़,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
पीताम्बर मंगानी
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
स्व. श्री गुरू शरण छाबड़ा
राजकीय महाविद्यालय सूरतगढ़,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

ब्रिटिशकालीन किसान आन्दोलन

पीताम्बर मंगानी, लक्ष्मी देवी नंदा

सारांश
हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। कृषि हमारे देश का आधार स्तम्भ है। देश का किसान खुशहाल होगा तभी देश खुशहाल होगा। कृषक समाज सबसे महत्वपूर्ण होते हुए भी पिछड़ा हुआ और समस्याओं से ग्रसित वर्ग रहा है। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि कृषक समाज को आगे बढ़ाने की, पिछले कुछ वर्षों में सामान्य वैज्ञानिकों का ध्यान इस दिशा में आकर्षित हुआ है। आज भूगोल, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि सभी विषयों में इस क्षेत्र में अध्ययन किये जा रहे हैं। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। अतः कृषि के विकास की तरफ अत्यधिक महत्व देने की आवश्यकता है, किन्तु कृषक वर्ग की बहुत सी समस्यायें हैं। यद्यपि इन्हें दूर करने के लिए अनेक प्रयास और अध्ययन किये जा रहे हैं। फिर भी कृषक वर्ग समस्याओं से निरन्तर संघर्ष कर रहा है। आज यह वर्ग मौलिक, भौतिक सुविधाओं को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। मार्क्स का मानना है कि कृषक आलू के बोरे के समान है। उनमें क्रान्ति की कोई भावना नहीं है। किन्तु लेनिन ने इसे गलत सिद्ध करके दिखाया। 1917 की बोल्शेविक क्रान्ति मजदूरों और किसानों के ही असन्तोष का परिणाम थी। माउत्सेतुंग का मानना था कि "कृषक समुदाय ही समाज में परिवर्तन ला सकता है। यही वह समुदाय है जिनमें संघर्ष के गुण विद्यमान हैं जो क्रान्ति कर सकता है।" मार्क्स ने लिखा है कि "ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक नीति का सबसे गम्भीर परिणाम समाज के जिस वर्ग पर पड़ा यह वर्ग कृषक ही था।"

कुटशब्दः ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, इतिहास, कृषक, क्रान्ति, परिणाम, असन्तोष, मजदूर

भूमिका
कृषकों की दशा के अध्ययन के लिए पं. जवाहरलाल नेहरू ने "डिस्कवरी ऑफ इण्डिया" के. एस. शेलवरकर ने "प्राब्लम ऑफ इण्डिया" में और रजनीपाम दत्त ने "इण्डिया टुडे" के माध्यम से प्रयास किया। किन्तु वास्तविक अर्थों में कृषक अध्ययन की शुरूआत 1940 से प्रारम्भ हुई। धीरे–धीरे यह अध्ययन भारतीय इतिहास की एक विद्या के रूप में बहुत तेजी से लोकप्रिय होती गयी। प्रो. एस.जी. रंगा सहजानन्द सरस्वती– कृषक अध्ययन की दिशा में पहला व महत्वपूर्ण अध्ययन "हिस्ट्री ऑफ दी किसान मूवमेंट" से प्रारम्भ हुआ जो 1940 में आल इण्डिया किसान सभा, मद्रास द्वारा प्रकाशित की गयी। इस ग्रन्थ में प्रो. रंगा व सहजानन्द सरस्वती ने कृषकों का ब्रिटिश भारत में होने वाले विद्रोहों का सिलसिलेवार ऑकलन किया है। प्रो. रंगा व सरस्वती ने आन्दोलन के समय कृषकों को संगठित करने का कार्य कर रहे थे। अतः उन्होंने किसान आन्दोलन को काफी गहराई से देखा और अध्यन किया। इस कृति में प्रो. रंगा व सहजानन्द ने 19वीं सदी के तीसरे दशक से प्रारम्भ हुए आन्दोलनों का वर्णन किया है। साथ ही आन्दोलन प्रारम्भ होने के कारणों की भी चर्चा की है। स्वामी सहजानन्द का मानना था कि कृषकों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति के कारण उनमें असंतोष उपजा और सरकार की कठोर भूमि नीति के कारण ज्यादा से ज्यादा कृषक भूमिहीन तथा गैरकृषक भू–स्वामी बन गये। फलतः कृषकों को गाँव से पलायन करना पड़ा तब से कृषक आन्दोलन उभरा और राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने लगा। 1922 में गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन के बन्द होने से इस आन्दोलन को भी काफी धक्का लगा और यह आन्दोलन अब साम्यवादियों और समाजवादियों के हाथों में चला गया।

एल. नटराजन– 1935 में बम्बई से प्रकाशित इनकी कृति "पिजन्ट अप राइजिंग इन इण्डिया" 1850 से 1900 तक है। जिसमें 19वीं सदी के दूसरे अर्धदशक के दौरान होने वाले आन्दोलनों की चर्चा की गयी है। इन्होंने तीन प्रमुख किसान आन्दोलनों की चर्चा की है साथ ही देश के अलग–अलग जगहों पर भी प्रमुख किसान आन्दोलन किये गये जो निम्न हैं–

1. **सन्थाल विद्रोहः** यह एक ऐतिहासिक आन्दोलन था और आदिवासी आन्दोलनों का अग्रणी था। इसमें किसानों द्वारा आन्दोलन के लिए अपनायी गयी प्रवृत्ति का नटराजन ने अपनी कृति में

चर्चा की है। इस आन्दोलन की प्रवृत्ति हिंसक थी जिसके कारण ब्रिटिश सरकार ने क्रूरता की नीति अपनायी और इस आन्दोलन को दबा दिया गया। किन्तु किसी विद्रोह को दबाने से विद्रोह शान्त नहीं हो जाता। संथाल जाति ने ब्रिटिश सरकार के शासन काल में दर्जनों बार विद्रोह किया परन्तु विद्रोह पूर्णतः नहीं दबाया जा सका। यह आन्दोलन जब तक नहीं दबाया जा सकता तब तक इस विद्रोह के बुनियादी कारणों का अध्ययन व उसे समाप्त करने की दिशा में प्रयास सफल नही हो सकता।

2. **नील विद्रोहः** पूर्वी बंगाल बेगना जिले के नील की खेती करने वाले किसानों से बेगार लेने, बेगारी के नाम पर हत्या, जबरदस्ती सजा देने अर्थात शोषण आदि के कारण उन किसानों में विद्रोह जन्म लेने लगा। आर्थिक व शारीरिक सभी प्रकार के शोषण के खिलाफ 52 गाँव के दो हजार किसान 1960 में बेगना जिले में आन्दोलन किया और हड़तालकर दी। शान्तिपूर्वक की गयी यह हड़ताल इतनी सफल व प्रभावशाली रही कि धीरे–धीरे पूर्वी बंगाल, ढाका, बारना और नालन्दा आदि जिलों में फैल गयी। सरकार ने उसे तोड़ने का असफल प्रयास किया। अन्ततः सरकार को घोषणा करनी पड़ी नील की खेती करने वाले किसानों का शोषण न किया जाय।
3. **किसान विद्रोहः** अंग्रेजों के औपनिवेशिक शोषण का कहर सबसे अधिक किसानों पर ही बरपा। औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों, भूराजस्व की नयी प्रणाली तथा उपनिवेशवादी प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्था ने किसानों की कमर तोड़ दी। दस्तकारी उद्योगों के तबाह हो जाने से इसमें लगे लोग भी खेती की तरफ वापस आने को मजबूर हुए जिससे कृषि योग्य जमीन पर दबाव बढ़ा। इस प्रकार कृषि का सम्पूर्ण स्वरूप ही परिवर्तित होने लगा। बड़ी जमींदारी वाले इलाकों में किसानों पर अत्याचार बढ़ने लगा। जमींदार उनसे मनमाने ढंग से अवैध लगान वसूलते और बेगार कराते। परिणामस्वरूप किसान धीरे–धीरे महाजनों के चंगुल में फंसते गये। इस प्रकार उनकी जमीन, फसले और पशु उनके हाथ से निकल कर जमींदारों, व्यापारियों, महाजनों और धनी किसानों के हाथ में पहुँचने लगा। नटराजन ने लिखा है कि "किसानों के विद्रोह ने बता दिया कि कृषक समाज ने तय कर लिया कि उन्हें किसी के साथ रियायत नहीं करना है। कृषकों में जबरदस्त एकता इस बात की प्रमाण थी कि उन्होंने इस अद्भूत तरीके के माध्यम से स्वयं मुक्ति प्राप्त कर ली।"
4. **मराठा विद्रोहः** दक्षिण के क्षेत्र में फसल अच्छी नहीं होती थी, किन्तु कर उनसे कठोरतापूर्वक ही वसूला जाता था। इससे उन्हें साहुकारों पर कर्ज के लिए निर्भर होना पड़ा और कर्ज के बदले भूमि रेहन रखना पड़ा और कर्ज के बदले भूमि रेहन रखनी शुरू की और अपनी जमीन से हाथ धोना पड़ा और वे तेजी से बेरोजगार होते गये। इस प्रकार साहुकार उनका शोषण कर रहे थे और सरकार कुछ नहीं कर रही थी। फलतः वहाँ के मराठा किसानों ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को सेना द्वारा दबाने का प्रयास अवश्य किया गया, किन्तु असफल रहें परिणामस्वरूप 1879 में दक्षिण के किसानों को राहत देने वाले कानून का निर्माण किया गया और साहूकारों को शोषण करने से रोका गया किसानों को भी कर्ज देने का आश्वासन दिया गया।
5. **व्ही. आर. राघवैय्याः** द ट्राइबल रिपोर्ट के माध्यम से आदिवासी विद्रोहों की चर्चा की। साहुकारों और सरकारी अधिकारियों द्वारा उनका शोषण और कृषकों के मन में शोषण के विरूद्ध प्रतिकार की भावना का वर्णन किया।
6. **वी.एस. गुहाः** इन्होंने पूर्वी बंगाल के आदिवासियों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि आदिवासियों की समस्या बड़ी व्यापक थी। आदिवासी क्षेत्र में काम करने वाली मिशनरियों ने उनकी समस्या को समझा और उनमें शोषण के विरूद्ध विद्रोह की भावना जागृत की।
7. **सुखवरी चौधरीः** "पिजेण्ट एण्ड वर्क्स मुवमेंट इन इण्डिया" सुखवीर चौधरी का अपना नया अध्ययन था। पहली बार उन्होंने मजदूर आन्दोलन के साथ कृषक आन्दोलन को जोड़ा। इनके मतानुसार 1905 से 1929 के मध्य जितने भी कृषक आन्दोलन हुए उनमें मजदूर आन्दोलन का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इन्होंने बंगाल के कृषकों की समस्याओं को बताया।
8. **चम्पारण सत्याग्रहः** सुखवीर चौधरी ने इस आन्दोलन की चर्चा अपनी कृति में की है और कहा कि यह आन्दोलन सर्वहारा वर्ग के प्रभाव से ही कृषकों ने किया। इस आन्दोलन में उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग, व्यवसायी और नौकरी पेशा छात्र–छात्रायें आदि सभी ने भाग लिया। चम्पारन में गाँधी के नेतृत्व वाला आन्दोलन चम्पारन के किसानों की गरीबी और तकलीफ के मूल कारणों के विरूद्ध संघर्ष का रूप नहीं ले सका। फिर भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भूमिकर न देने का नारा दिया और कृषकों की समस्याओं के प्रति सहानुभूति दिखायी और किसानों को राष्ट्रीय धारा में जोड़ने का काम किया और अन्ततः इसका स्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में सामने आया।
9. **मोपला विद्रोहः** 1922 के मोपला विद्रोह का आधार साम्प्रदायिक और आर्थिक दोनों था। यहाँ भू–स्वामी हिन्दू और किसान मुसलमान थे वहाँ सम्प्रदायवादियों की उत्प्रेरण और उनके द्वारा भड़काए जाने से आर्थिक वर्ग संघर्ष ने साम्प्रदायिक रूप ले लिया। हालांकि इस विद्रोह को सुखवीर चौधरी ने मजदूरी के साथ जोड़ा। उनके अनुसार इस आन्दोलन का स्वरूप विखरा हुआ नहीं वरन् संगठित था। इसमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ मजदूर भी सम्मिलित थे। यह आन्दोलन बहुजन हिताया था। इससे समाज के एक वर्ग को ही नहीं वरन् सभी वर्गों को लाभ मिला। यद्यपि इस आन्दोलन को दबाने के लिए सरकार ने कठोर कदम उठाये किन्तु असफल रही। इस आन्दोलन से भारतीय समाज में एक नये तरह की एकता सामने आयी जो एक बड़ी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।
10. **सी. राजेश्वर रावः** इन्होंने तेलंगाना आन्दोलन का नेतृत्व किया था। अतः अपनी कृति "द हिस्टोरिकल तेलंगाना स्ट्रगल सम युजफूल लेशन क्रम रि–एक्सपिरियेन्स" में इस आन्दोलन की चर्चा की है। **तेलंगाना आन्दोलन**– साम्राज्यवाद के विरूद्ध इन राष्ट्रवादी आन्दोलनों का प्रभाव तेलंगाना के किसानों पर पड़ा। यहाँ के किसानों की बहुत समस्यायें थी उनको उचित साधन प्राप्त नहीं थे। फलतः 1946 से 1951 तक इन कृषकों ने यहाँ आन्दोलन किया। अन्ततः यह आन्दोलन सफल रहा और उन्हें व्यापक सामाजिक व आर्थिक अधिकार प्राप्त हुए।
11. **पी. यसुन्दरैय्याः** पी. यसुन्दरैय्या ने भी अपनी कृति में तेलंगाना आन्दोलन के विषय में ही चर्चा की है कि "यह आन्दोलन साम्यवादियों द्वारा भड़काया गया आन्दोलन नहीं था।" अतः इस आन्दोलन को साम्यवाद के परिप्रेक्ष्य में नहीं देखना चाहिए।
12. **सुनील सेनः** इन्होने बंगाल के किसानों की समस्याओं आदि का वर्णन किया है। इनके अनुसार बंगाल के कृषक व्यापारी जमींदार और ब्रिटिश सरकार की नौकरशाही नीति के शोषण के शिकार हो रहे थे। जब ब्रिटिश सरकार के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन चला तो उनका प्रभाव यहाँ के किसानों पर भी पड़ा और यहाँ के कृषकों ने भी आन्दोलन में भाग लिया।
13. **तिभागा आन्दोलनः** 1940–42 के बाद बंगाल के तिभागा

आन्दोलन की चर्चा सुनील सेन ने की है। इस आन्दोलन का नारा "तिभागा चाय" थी। यह अन्दोलन सफल रहा और सरकार को इन किसानो के हित में कानून पास करना पड़ा।

14. **ज्योति बसु के शब्दों में**: "बंगाल के किसानों को उनका हिस्सा नहीं बल्कि उनकी जोती गयी जमीन का हिस्सा भी देना चाहिए।" बंगाल का तिभागा आन्दोलन भी तेलंगाना आन्दोलन के समान भारत के अन्य क्षेत्रों को भी लाभ दिलाया था।
15. **एस.व्ही. पुस्लेकर**: 1945 में उन्होंने "रिवोल्ट ऑफ दी वारलिस" लिखा। इस ग्रन्थ में उन्होंने वर्ली किसानों के आन्दोलन का वर्णन किया है। वर्ली किसानों का आन्दोलन– पश्चिमी महाराष्ट्र के दहानु और अम्बड़ गाँव के वर्ली किसानों में अत्याचार और शोषण के परिणामस्वरूप 1945 में जबरदस्त परिवर्तन आया और पहली बार वे किसान एक झण्डे के नीचे एकत्रित हुए। इसका उद्देश्य तमाम शोषण व अत्याचार के विरूद्ध विद्रोह करना और उससे मुक्ति प्राप्त करना था। वर्लियों के किसानों को जागृत करने में किसान सभा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।" 21 जनवरी 1946 को बम्बई के महालक्ष्मी रेन्स रोड मैदान पर 15 हजार वर्ली एकत्रित हुए। यह आन्दोलन संगठित व अहिंसात्मक था। इस आन्दोलन को अन्ततः सफलता मिली और सरकार को वर्लियों की सभी माँगे स्वीकार करनी पड़ी।
16. **फादर स्टीफन**: इनकी कृति "रिवेलियन प्राफिट" बम्बई से प्रकाशित हुई। इन्होंने अपनी कृति में जनजातियों में पायी जाने वाली विशेषताओं का वर्णन किया है।
17. **डी.एन. धनगरे**: इनकी कृति "पिजेन्ट इन वर्क्स मुवमेंट इन इण्डिया" 1920–30 में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से प्रकाशित हुई। इन्होंने 1920 से 50 तक के आन्दोलनों का अलग–अलग अध्ययन किया जैसे केरल के मालावार के मोपला कृषक विद्रोह, बारदोली सत्याग्रह, अवध के कृषक विद्रोह, आन्ध्र से तेलंगाना विद्रोह व महाराष्ट्र के किसानों का विद्रोह आदि का वर्णन किया। धनगरे की मान्यता थी कि मध्यकालीन शासकों की कठोर नीति के कारण कृषक समाज में परिवर्तन आ रहा था। मुगल शासकों की कृषि पर कठोर कर नीति और उसे निर्भरतापूर्वक वसूलना कृषकों के लिए असह्य हो गया था। इस कारण कृषकों का पलायन एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में हो रहा था अंग्रेजी शासन काल में भी ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण कृषक असन्तुष्ट थे किन्तु अब उनमें जागृति आ गयी थी। वे असन्तोष का विरोध करने लगे उन्होंने ब्रिटिश हस्तक्षेप का जवाब दिया। चाहे वह किसी भी रूप में हो लेकिन कृषकों में विद्रोह की क्षमता विद्यमान थी।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि देश के किसानों के उपर कर्ज की मार और ब्रिटिश सरकार की कठोर कानून की मार चलती आ रही थी। इसकी आड़ में ब्रिटिश सरकार और साहुकारों के द्वारा किसानों का शोषण किया जा रहा था। फलतः 19वीं शदी के प्ररम्भ से ही किसानों में जागरूकता व एकजुटता आई और देश में जगह–जगह इसके खिलाफ आवाज उठाना शुरू हुआ जो बाद में विद्रोह का रूप ले लिया था। यह लगभग 1917 से 1947 के बीच का समय किसान और आजादी की लड़ाई के साथ हुई। किसानों को विगत विद्रोहों से अनेकों लाभ भी प्राप्त हुए, लेकिन आज भी किसान अपने कृषि और अपने विकास के लिए संघर्ष कर रहा हैं इन किसानों की समस्याएं कम नही हुई फर्क सिर्फ इतना है कि विगत समय में समस्या कुछ और थी, आजादी के 75 वर्ष बाद समस्याएं कुछ और हैं। किसान की समस्याओं के लिए आज एक शक्तिशाली और व्यापक किसान आंदोलन की आवश्यकता है। किसान सभा के संस्थापक जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के बताये मार्गों पर चलकर ही हम यह काम कर सकते हैं और वर्तमान किसान की समस्याओं को दूर कर सकते हैं क्योंकि वर्तमान सरकारें भी किसानों की तरफ ध्यान नहीं दे रही हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Nehru JL. The Discovery of India', Oxford University Press, Delhi; 1985.
2. Dutta, Pam R. 'India today', MacMilan India, Delhi; 1985.
3. Sharma DP. 'Swami Sahajananad, Gandhi and Subhash', (Collected Lecturers of Swami Sahajanand Sarswati), Swami Sahajananad Sarswati Smriti Kendra, Ghazipur, U.P; 2001.
4. मुखर्जी, आर.के., (1935), 'लैंड प्राब्लम्स इन इंडिया', कलकत्ता।
5. नेहरू, जवाहर लाल, (1936), 'इंडिया एण्ड द वर्ल्ड', नई दिल्ली।
6. गुप्ता, आर.बी., (1937), 'एग्रीकल्चरल प्राइसेंस इन द यूनाइटेड प्रॉविसेस', इलाहाबाद।
7. परूथी, डॉ. आर.के., (1967), 'आधुनिक भारत (1919–1939) राष्ट्रवादी साहित्य एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन', बनारस।
8. चौधरी, ए.के., (1972), 'सोसलिस्ट मूवमेंटस इन इंडिया', कलकत्ता।
9. घंगारे, डी.एन., (1975), 'एग्रेरियन मूवमेन्ट्स एण्ड गांधियन पालिटिक्स', आगरा।
10. दत्त, आर.पी., (1977), 'आज का भारत', दिल्ली।
11. प्रताप, महेन्द्र, (1988), 'उत्तर प्रदेश में किसान आन्दोलन', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. सिंह, अयोध्या, (1996), 'भारत का मुक्ति संग्राम, मैकमिलन इण्डिया', दिल्ली।
13. चन्द्र, विपिन, (2002), :भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष', दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।